पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/2018-20 प्रकाशित: 01.04.2019 इस अंक का मूल्य 2 रूपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

नववर्ष विक्रमी सम्वत् उत्सव

शनिवार, 6 अप्रैल 2019

प्रातः 10 से 12.30 तक

स्थानः हरेकृष्णा मन्दिर, (गुफावाला)

बी-1 ब्लॉक, लाजपत नगर, नई दिल्ली

संयोजकः सुरेन्द्र शास्त्री, 9310909303

वर्ष-35 अंक-21 फाल्गुन-2076 दयानन्दाब्द 195 01 अप्रैल से 15 अप्रैल 2019 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.

प्रकाशित: 01.04.2019, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में शहीद भगतसिंह,राजगुरू,सुखदेव के

88 वें बलिदान दिवस पर ''राष्ट्र रक्षा यज्ञ'' सम्पन्न

वीर शहीदों के बलिदान से मिली देश को आजादी – अनिल आर्य

स्वदेशी के सर्वप्रथम उद्घोषक थे महर्षि दयानन्द – आचार्य महेन्द्र भाई

शनिवार, 23 मार्च 2019, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली के तत्वावधान में शहीद भगतसिंह, राजगुरू, सुखदेव के 88 वें बलिदान दिवस पर ''राष्ट्र रक्षा यज्ञ'' व ''आंतकवाद विरोधी दिवस'' का आयोजन नई दिल्ली के जन्तर मन्तर पर किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य प्रकाशवीर शास्त्री ने यज्ञ करवाया और राष्ट्रीय एकता व अखण्डता के लिये आहुतियां डलवाई। वैदिक विद्वान आचार्य गवेन्द्र शास्त्री ने कहा कि शहीद भगतसिंह का पूरा परिवार आर्य समाजी था,आज कुछ लोग उन्हें कम्युनिस्ट कहते हैं जबकि उनका यज्ञोपवीत संस्कार पूरे वैदिक पद्वति से हुआ था। महर्षि दयानन्द से प्रेरणा पाकर वह आजादी की लड़ाई में कूद पड़े, उन्होंने देश के युवाओं से क्रांतिकारियों से प्रेरणा लेने का

(शेष पृष्ठ 4 पर)

आर्य समाज, मंगोलपुरी, दिल्ली ने ''होली मंगल मिलन'' पर शहीदों को दी श्रद्धांजलि

आर्य समाज ने अपने जन्मकाल से ही सामाजिक समरसता का सन्देश दिया—अनिल आर्य

समाजसेवी श्री रामकुमार भगत का स्वागत करते अनिल आर्य,प्रवीन आर्या,महेन्द्र टांक,महेन्द्र भाई व राजेन्द्र आर्य। द्वितीय चित्र—आचार्य सुरेन्द्र शास्त्री का स्वागत करते धर्मपाल आर्य,अनिल आर्य,महेन्द्र भाई, नवीन अरोड़ा, विम्मी अरोड़ा व दीवानसिंह चन्देल।

रविवार, 17 मार्च 2019, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् व आर्य समाज, मंगोलपुरी, दिल्ली के तत्वावधान में एफ ब्लाक पार्क में होली मंगल मिलन सोल्लास मनाया गया। परिषद् के राष्ट्रीय महामन्त्री महेन्द्र भाई ने यज्ञ करवाया,उन्होंने जीवन में परोपकार की भावना को स्थान देने का सन्देश दिया। श्रीमती प्रवीन आर्या के मधुर भजन हुए। मुख्य अतिथि परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि होली का पर्व आपसी भाई चारे का सन्देश देता है, आज जातिवाद के नाम पर देश को बांटा जा रहा है जो चिन्ताजनक है हमें समाज को जोड़ने का कार्य करना है, जातिवाद राष्ट्र की एकता, अखण्डता में बाधक है उसे समझने की आवश्यकता है। आर्य समाज ने अपने जन्मकाल से ही सामाजिक समरसता के लिये सभी वर्गों को जोड़ने का कार्य किया है लेकिन इस जातिवाद की बीमारी ने आर्य समाज का किया हुआ सभी पुरूषार्थ समाप्त कर दिया। समारोह का संचालन समाज के मन्त्री धर्मपाल आर्य व परिषद् के मण्डल अध्यक्ष महेन्द्र टांक ने कुशलता पूर्वक किया। समारोह की अध्यक्षता समाजसेवी रामकुमार भगत ने की। समाज के प्रधान जगदीशशरण आर्य,दशरथ भारद्वाज, विम्मी—नवीन अरोड़ा, दीवानसिंह चन्देल,राजेन्द्र आर्य,सुरेन्द्र शास्त्री, विवेक अग्निहोत्री आदि विशेष रूप से उपस्थित थे।

भारत विभाजन के लिए जिम्मेदार अंग्रेज न थे, मुस्लिम लीग थी

—कृष्णचन्द्र गर्ग

आम तौर पर अपने आपको राष्ट्रवादी कहने वाले हिन्दू भारत विभाजन के लिए अंग्रेजों को दोषी ठहराते हैं। परन्तु सच्चाई यह है कि भारत विभाजन के लिए जिम्मेदार अंग्रेज नहीं, मुस्लिम लीग थी। मुस्लिम लीग भारत के मुसलमानों का एक राजनैतिक दल था। उस समय संयुक्त भारत में मुसलमानों की आबादी 24 प्रतिशत के लगभग थी। मुस्लिम लीग के नेता मुहम्मद अली जिन्नाह ने महसूस किया कि भारत के स्वतंत्र होने पर प्रजातन्त्र में मुसलमान शासक नहीं बन सकते। इसलिए उन्हें सत्ता में आने के लिए ऐसा देश चाहिए था जिसमें मुसलमान बहुसंख्या में हों। इसलिए मुस्लिम लीग ने दो राष्ट्र का सिद्धान्त दिया – एक हिन्दू बहुसंख्यक देश और दूसरा मुस्लिम बहसुंख्यक देश। इस सम्बन्ध में जिन्नाह ने 23 मार्च 1940 को लाहौर में हुए मुस्लिम लीग के सम्मेलन में कहा था –

"It is extremely difficult to appreciate why our Hindu friends fail to understand the real nature of Islam and Hinduism. They are not religions in the strict sense of the word, but are, in fact, different and distinct social orders. It is a dream that the Hindus and Muslims can ever evolve a common nationality, and this misconception of one Indian nation has gone far beyond the limits, and is the cause of most of our troubles, and will lead India to destruction, if we fail to revise our notions in time. The Hindus and the Muslims belong to two different religious philosophies, social customs, and literature. They neither intermarry, nor interdine together, and indeed they belong to two different civilizations which are based mainly on conflicting ideas and conceptions. Their aspects on life and of life are different. It is quite clear that Hindus and Musalmans derive their inspiration from different sources of history. They have different epics, their herores are different, and they have different episodes. Very often the hero of one is a foe of the other, and likewise, their victories and defeats overlap. To yoke together two such nations under a single State, one as a numerical minority and the other as a majority, must lead to growing discontent and the final destruction of any fabric that may be so built up for the government of such a State."

अर्थात – ''हमारे हिन्दू मित्र इस्लाम और हिन्दुतत्व की वास्तविकता को क्यों नहीं समझते, मुझे इस बात को समझना बेहद मुश्किल लगता है। असल में ये मजहब नहीं हैं, ये दोनों अलग–अलग सामाजिक व्यवस्थाएं हैं। यह एक स्वप्न है कि हिन्दू और मुसलमान कभी सांझी राष्ट्रीयता अपना सकते हैं। एक राष्ट्र की यह गलत धारणा सीमा पार तक खींची जा चुकी है, यही हमारी समस्याओं का कारण है। अगर हमने समय रहते अपनी मान्यताओं को न बदला तो यह धारणा भारत को तबाही की ओर ले जाएगी। हिन्दू और मुसलमान दो अलग–अलग मजहबी विचाराधारओं, सामाजिक रीति रिवाजों और साहित्य से जुड़े हैं। ये आपस में न शादियां करते हैं और न ही इनका आपस का खान–पान का सम्बन्ध है। वास्तव में ये दो अलग–अलग सभ्यताओं से सम्बन्ध रखते हैं जो एक दूसरे की विरोधी हैं। उनके जीवन के लक्ष्य अलग–अलग हैं। यह बिल्कुल स्पष्ट है कि हिन्दू और मुसलमान अपनी प्रेरणा अलग–अलग इतिहास से लेते हैं। इनके महाकाव्य, इनके आदर्श पुरुष, इनकी कथा–कहानियां अलग–अलग हैं। आम तौर पर एक का महाबली दूसरे का शत्रु है, एक की जीत होती है तो दूसरे की हार होती है। ऐसी दो कौमों का एक राष्ट्र में बांधना जिनमें से एक अल्पसंख्यक है और दूसरी बहुसंख्यक है, असन्तोष को बढ़ावा देगा और अन्त में उस रचना का विनाश करेगा जो उस राष्ट्र की सरकार बनाने के लिए रचा गया था।''

ऐसे ही भाषण जिन्हा ने और कई अवसरों पर दिए थे।

वायसराय लार्ड विक्टर लिनलिथगो (1936–44) और लार्ड अरचीबाल्ड वेवल (1944–47) ने जिन्नाह को उसके मुँह पर कह दिया था कि वे भारत का विभाजन नहीं करेंगे। उनके बाद आए लार्ड लुईस माऊटबैटन (मार्च 1947–अगस्त 1947) ने विभाजन सिर्फ तब स्वीकार किया जब मुस्लिम लीग ने पहले तो धमकी दी और फिर हिन्दुओं पर अत्याचार करना आरम्भ कर दिया। जून 1947 में गांधी जी समेत कांग्रेस के नेताओं ने भी भारत का विभाजन स्वीकार कर लिया। गान्धी जी की प्रतिज्ञा कि ''भारत का विभाजन मेरी लाश पर होगा'' भी थोथी निकली क्योंकि मुस्लिम लीग ने भारत के विभाजन के बिना मानना नहीं था और गान्धी जी की भूख हड़ताल से मृत्यु हो जाती।

वास्तव में विभाजन की जड़ें इस्लाम में निहित हैं। इस्लाम के अनुसार शासक मुसलमान ही हो सकते हैं। मौलाना अबदुल कलाम आजाद को राष्ट्रवादी मुसलमान कहना गलत था, वास्तव में उसका लक्ष्य सारे भारत को ही इस्लामी देश बनाना था। जिन्नाह समय के अनुसार प्रजातन्त्र के महत्त्व को समझता था।

16 अगस्त 1946 को मुस्लिम लीग ने 'सीधी कार्रवाई (Direct Action) की घोषणा कर दी और जिन्नाह ने ऐलान कर दिया ''भारत का विभाजन होगा अथवा भारत का विनाश होगा'' (We may have either divided India or destroyed India)A यह घोषणा पाकिस्तान बनाने के लिए दबाव डालने के लिए थी। इसका गुप्त एजण्डा हिन्दुओं पर अत्याचार करने का था। बंगाल में मियां हसन शहीद सुहरावर्दी मुख्यमंत्री था। उसके संरक्षण में कलकत्ता और नोआवखली में हिन्दुओं पर मुसलमानों ने अथाह अत्याचार किए। मुस्लिम लीग के नाम पर हजारों मुसलमानों की विशाल सभा होती। भाषणों में हिन्दुओं पर अत्याचार करने की योजनाएं बनाई जातीं। सभा सम्पन्न होने पर हजारों मुसलमान भूखे भेड़ियों की तरह निहत्थे हिन्दुओं पर टूट पड़ते। दस हजार से अधिक हिन्दू मारे गए, पन्द्रह हजार से अधिक जख्मी हुए, सैंकड़ों मकान और दुकानें जलाई गईं।

हिन्दू जो भारत विभाजन के लिए अंग्रेजों को दोषी ठहराते हैं, वे सत्य से और मुसमलानों से डरते हैं। भारत विभाजन का दोष मुसलमानों की अपेक्षा अंग्रेजों पर, जो चले गए हैं, लगाना बहुत आसान है। मुसमलानों के साथ बर्तना बेहद कठिन काम हैं। जिन्नाह हिन्दुओं और मुसमलानों के सम्बन्ध में सत्य कहता था, परन्तु हिन्दुओं का दुर्भाग्य है कि हमारे हिन्दू नेता इस सत्य को स्वीकार न करते थे और आज भी नहीं करते।

नोट :–(1) भारत का विभाजन दो कारणों से बेहद दुखदायक रहा – (एक) विभाजन करने में समझदारी न दिखाई गई जिस कारण से कई लाख निर्दोष लोग मारे गए। (दो) मजहब के आधार पर बंटवारे के बावजूद बड़ी संख्या में मुसलमानों को भारत में रहने दिया गया। (2) एक और महत्त्वपूर्ण बात – अगर भारत का विभाजन न हुआ होता तो आज समूचे अविभाजित भारत पर मुसलमानों का राज होता।

– फोन–0172–4010679, kcg831@yahoo.com

जीवन को ऊँचा कैसे उठाएँ

किसी व्यक्ति ने किसी संत से पूछा-'इस जीवन को सुन्दर बनाने की चाह हैं। इसलिए हमारे लिए कोई उपदेश करो कि जीवन को और अच्छा कैसे बनायें?'

फकीर संत ने अपने पास रखी हुई तीन चीजें उठाकर, उस व्यक्ति को दे दी-थोड़ी सी रूई, एक मोमबत्ती और सूई। तीनों चीजे हाथ में देने के बाद कहा-बस हो गया उपदेश अब जाओ।

वह आदमी चल पड़ा, पर उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि फकीर संत ने ये चीजे क्यों दी है। वह व्यक्ति वापस फकीर संत के पास आकर बोला-''महाराज ये जो कुछ आपने दिया है, यह मेरी समझ में नहीं आ रहा है।''

संत ने कहा-''यह जो रूई दी है। इसकी एक ही खासियत है कि यह धागा बनकर हर एक की लाज ढकती है। मेरे परमात्मा का प्यारा इंसान भी वहीं है। जो दूसरों की लाज ढका करता है और दूसरों को संरक्षण देता है।'' और यह मोमबत्ती, मोम बनकर जलती जरूर है लेकिन प्रकाश बनकर सब जगह फैल जाती है। ऊंचाई तक पहुंच जाती है। तुम भी इसी रूप को धारण करो। पूरी जिंदगी लगा देना, दूसरों के लिए प्रकाश बनकर रहना।''

''तीसरी चीज तुम्हें दी है-'सूई'। सूई के बिना संसार का काम नहीं चलता। टुकड़ों को, फटे हुओं को, कटे हुओं को जोड़ने का काम सूई ही करती है। सूई के बिना कोई जुड़ा नहीं करता। तो दुनिया में भी परमात्मा का प्यारा वही है जो फटे हुए दिलों को सिला करता है, जो टूटे दिलों को जोड़ा करता है, बिखरे हुओं को जो इकट्ठा करता है।'' यही मेरा उपदेश है।

–मंजु गुप्ता

13 अप्रैल श्री रामनवमी पर विशेष लेख

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम का आदर्श एवं प्रेरणादायक जीवन

—मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

आर्यावर्त वा भारतवर्ष में प्राचीन काल से अध्यात्म का प्रभाव रहा है। सृष्टि के आरम्भ में ही ईश्वर ने चार ऋषियों के माध्यम से वेदों का ज्ञान दिया था। हमारे उन ऋषियों व बाद में ऋषि परम्परा ने इस ज्ञान को सुरक्षित रखा जिस कारण आज भी वेदों संहितायें व वेदों का ज्ञान सर्वसाधारण के लिये सुलभ है। यह बात और है कि कौन उससे लाभ उठाता है या नहीं। महाभारत काल के बाद वेदों में अनेक प्रकार की विकृतियां आ गईं थी। इसी कारण समाज में भी विकृतियां फैल गईं और वैदिक धर्मी लोग धर्म के मर्म को भूल कर पांखण्डी और अन्धविश्वासी बन गये। इसका परिणाम भारत में छोटे छोटे राज्य बने, सामाजिक विकृतियां उत्पन्न हुई तथा धर्म में सत्याचार के स्थान पर अज्ञान पर आधारित मिथ्याचार व स्वार्थ आदि की परम्पराओं में वृद्धि हुईं। ऐसे समय में बाल्मीकि रामायण में भी प्रक्षेप हुए। रामायण वा राम के सम्बन्ध में अनेक मिथ्या किम्वदन्तियां प्रचलित हुईं और अवतारवाद आदि सम्बन्धी अनेक अविश्वसीय कथाओं को भी रामायण में जोड़ दिया गया। महात्मा बुद्ध के बाद व कुछ शताब्दी पूर्व भारत में पुराणों की रचना हुई जिसमें ज्ञान व विज्ञान की उपेक्षा कर अनेक अज्ञान से युक्त बातों का प्रचार हुआ। रामायण का कुछ प्रभाव भी भारतीयों में रहा। यवनों की पराधीनता के काल में तुलसीदास जी उत्पन्न हुए जिन्होंने लोक–भाषा अवधि वा हिन्दी में काव्यमय रामचरित मानस की रचना की। इससे पूर्व धर्म व मत सम्बन्धी ग्रन्थ संस्कृत भाषा में थे। राम–चरित–मानस के लोक भाषा में होने के कारण इसका जन–जन में प्रचार हुआ। इसका कारण मर्यादा पुरुषोत्तम राम का उज्जवल प्रेरणादायक चरित्र था। यदि कोई मनुष्य राम का जीवन चरित जान ले और उसके अनुसार आचरण करें तो वह मनुष्य जीवन में अनेक प्रकार की सफलताओं को प्राप्त कर सकता है। आर्यसमाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द ने सभी शास्त्रीय एवं इतिहास ग्रन्थों का अध्ययन किया था। उन्होंने पुराणों की परीक्षा भी की थी। ऋषि दयानन्द ने पाया कि रामचन्द्र जी का जीवन वैदिक मान्यताओं के आधार पर व्यतीत हुआ था। एक क्षत्रिय राजा व राजकुमार का जीवन जैसा होना चाहिये वैसा ही आदर्श एवं मर्यादा में बन्धा हआ जीवन रामचन्द्र जी का था। अतः ऋषि दयानन्द ने वेदों को जो ईश्वर प्रदत्त ज्ञान होने से अखिल–धर्म का मूल हैं, उसका प्रचार–प्रसार किया और साथ ही वेद की मान्यताओं पर आधारित अपने सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों की रचना भी की। राम के जीवन में हम एक आदर्श पुत्र, आदर्श भाई, आदर्श राजा, आदर्श मित्र, आदर्श शत्रु, ईश्वर भक्त, वेदानुयायी, ब्रह्मचर्य के पालक, प्रजा पालक, भक्त वत्सल, आदर्श पति, तपस्वी, धर्म पालक, ऋषि व धर्म के रक्षक आदि अनेक रूपों व गुणों को पाते हैं। यदि हम रामचन्द्र जी के इन गुणों को अपने जीवन में धारण कर लें तो हमारा कल्याण हो सकता है। यही कारण था कि लाखों वर्ष पूर्व उत्पन्न राम व उनके रावण के साथ युद्ध आदि की घटनाओं पर आधारित बाल्मीकि रामायण व राम चरित मानस ग्रन्थों ने देशवासियों के हृदय पर अपनी अमिट छाप बनाई। आज भी रामायण व इस पर आधारित अनेक ग्रन्थ उपलब्ध हैं जिनका अध्ययन किया जाता है। रामचन्द्र जी के जीवन से वर्तमान समय में भी लोग अपनी घरेलू व राजनीति की समस्याओं के समाधान ढूंढने का प्रयत्न करते हैं। महर्षि दयानन्द ने बाल्मीकि रामायण को इतिहास का ग्रन्थ स्वीकार कर इसके विश्वसनीय, सृष्टिक्रम के अनुकूल तथा वेदानुकूल भाग का अध्ययन करने का विधान वैदिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में किया है।

आर्यसमाज में अनेक विद्वानों ने रामायण पर कार्य किया और उसका मन्थन कर उसका वेदानुकूल व विश्वसीय इतिहास सम्बन्धी भाग श्लोकों के हिन्दी अनुवाद सहित प्रस्तुत किया है। वर्तमान में आर्यसमाज में पं. आर्यमुनि, स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती तथा महात्मा प्रेमभिक्षु कृत बाल्मीकि रामायण पर आधारित ग्रन्थों का विशेष प्रचार है। हमारे पास यह सभी ग्रन्थ उपलब्ध हैं तथा रामायण पर कुछ अन्य आर्य विद्वानों के अनुवाद व ग्रन्थ उपलब्ध है। हमने स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती जी की बाल्मीकि रामायण को आद्योपान्त पढ़ा है। यह ग्रन्थ पढ़ने योग्य है। इसमें प्रक्षिप्त भाग को हटाकर रामायण को रोचक रूप में प्रस्तुत किया गया है जिसे पढ़ने से पाठक को रामचन्द्र जी विषयक प्रायः पूर्ण इतिहास का ज्ञान होता है। यह ग्रन्थ यद्यपि एक वृहद ग्रन्थ है परन्तु गीता प्रेस की बाल्मीकि रामायण की तुलना में काफी छोटा है। इसे कुछ ही दिनों में पढ़ा जा सकता है। इस पढ़ने से रामायण का लगभग पूर्ण ज्ञान हो जाता है जितना ज्ञान किसी मनुष्य के लिये आवश्यक है। हम अनुभव करते हैं कि प्रत्येक परिवार में यह ग्रन्थ होना चाहिये और सबको इसका तन्मयता से पाठ करना चाहिये।

राम चन्द्र जी की शिक्षा–दीक्षा ऋषियों के सान्निध्य में हुई थी जहां वेदाध्ययन सहित उन्हें क्षत्रिय धर्म की शिक्षा भी दी जाती थी। राम व लक्ष्मण ऋषियों के सान्निध्य में सन्ध्या व यज्ञ करते थे तथा अपने कर्तव्यों सहित शस्त्र संचालन एवं वेदज्ञान प्राप्त करते थे। रामायण के अनुसार रामचन्द्र जी का स्वरूप व व्यक्तित्व अत्यन्त सुन्दर, स्वस्थ, आकर्षक, प्रभावशाली एवं विद्या व सदाचार से परिपूर्ण था। वह माता, पिता तथा आचार्यों के आज्ञाकारी व सेवक तो थे ही साथ ही अपने भाईयों के प्रति भी उनका व्यवहार वेद व शास्त्रों की मर्यादाओं के अनुसार था। प्रजा भी उनके व्यक्तित्व एवं व्यवहार से प्रभावित व उन पर मुग्ध थी। रामचन्द्र जी ऋषि विश्वामित्र के साथ वन में रहे और उनसे अध्ययन किया। वनों में ऋषियों के अनेक आश्रम थे जहां ऋषि–मुनि–विद्वान–वानप्रस्थी व संन्यासी वेदानुकूल जीवन व्यतीत करते हुए शोध, अनुसंधान एव शस्त्र विज्ञान सहित आयुद्ध निर्माण का कार्य किया करते थे। लंका का राजा रावण इन ऋषियों के कार्यों के प्रति आजकल के आतंकवादियों के स्वभाव वाला था तथा निर्दोष और ईश्वर भक्ति में मग्न ऋषियों व उनके आश्रम में निवास करने वाले विद्यार्थियों पर अत्याचार करता था। बहुत से ऋषि व विद्वान इस कारण अकाल मृत्यु को प्राप्त होते थे। अतः रामचन्द्र जी के वहां होने से उन्होंने ऋषियों को कष्ट देने वाले अनेक राक्षसों का वध किया था। एक राजा व राजकुमार होने के कारण उन्हें दोषी व अपराधी प्रवृत्ति के दुष्ट लोगों को दण्ड देने का पूर्ण अधिकार था।

रामचन्द्र जी ने गुरु विश्वामित्र जी के साथ राजा जनक की नगरी मिथिलापुरी में सीता के स्वयंवर में प्रवेश किया था और वहां एक प्राचीन भारी धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाते हुए उसे तोड़ डाला था। इस धनुष पर अन्य राजा प्रत्यंचा नहीं चढ़ा सके थे। यह राम की वीरता व पराक्रम का आरम्भ था। सीता से विवाह कर आप अयोध्या आये थे। कुछ दिन बाद आपके राज्याभिषेक का निर्णय आपके पिता दशरथ व मंत्री परिषद ने लिया था। पारिवारिक व देश की परिस्थितियों के कारण आपको अगले ही दिन 14 वर्ष के लिये वन जाना पड़ा। बाल्मीकि रामायण ने इसका वर्णन करते हुए लिखा है 'आहूतस्याभिषेकाय विसृष्टस्य वनाय च। न मया लक्षितस्तस्य स्वल्पोऽप्याकारविभ्रमः।। ' इसका अर्थ है कि "राज्याभिषेकार्थ बुलाये हुए और वन के लिये विदा किए हुए रामचन्द्र के मुख के आकार में ऋषि बाल्मीकि जी ने कुछ भी अन्तर नहीं देखा।" कहां तो रामचन्द्र जी को राजा बनना था और कहां अगले ही दिन उन्हें सभी राजकीय सुख–सुविधाओं का त्याग कर वन जाने को कहा गया। इस पर भी वह इन घटनाओं से किंचित विचलित हुए बिना पिता की आज्ञा पालन करने के लिए सहर्ष वन जाने के लिये तैयार हो गये। विश्व इतिहास में ऐसी घटना दूसरी नहीं है। आज राजनीति का स्तर कितना गिर गया है वह प्रायः सभी राजनीतिक नेताओं व उनके अनुचरों के दिन प्रतिदिन के बयानों से देखा व जाना जा सकता है। वह देश के हितों की उपेक्षा करने से भी गुरेज नहीं करते। दूसरी ओर राजा बनाने की घोषणा सुनकर भी राम के चेहरे पर प्रसन्नता का भाव नहीं देखा गया और वन जाने के लिये कहने पर भी उनके मुख पर किसी प्रकार के दुःख या चिन्ता का भाव नहीं था। यह स्थिति एक बहुत उच्च कोटि के योग साधक वा ईश्वर भक्त की ही हो सकती है। इससे रामचन्द्र जी के व्यक्तित्व का अनुमान लगाया जा सकता है जो कि आदर्श है। इससे शिक्षा लेकर हम भी सुख व दुःख की स्थिति में स्वयं को समभाव वाला बनाकर जीवन को ऊंचा उठा सकते हैं। रामचन्द्र जी के गुणों का वर्णन करते हुए आर्य विद्वान श्री भवानी प्रसाद जी ने लिखा है 'वस्तुतः दशरथनन्दन राम स्वकुलदीपक, मातृमोदवर्द्धक तथा पितृनिर्देशपालक पुत्र, एकपत्नीव्रतनिरत पति, प्राणप्रियाभार्यासखा, सुहृददुःखविमोचक, मित्र, लोकसंग्राहक, प्रजापालक नरेश, सन्तानवत्सलपिता और संसार मर्यादा–व्यवस्थापक, परोपकारक, पुरुषरत्न का एकत्र एकीकृत सन्निवेश, सूर्यवंश प्रभाकर, कौशल्योल्लासकारक, दशरथानन्दवर्धन, जानकी जीवन, सुग्रीवसुहृद्, अखिलार्यनिषेवितपादपद्म, साकेताधीश्वर, महाराजाधिराज आदि गुणों से युक्त थे।' यह सभी गुण अन्य कहीं किसी मानव में मिलना दुर्लभ है।

रामायण के सुग्रीव–हनुमान मित्रता, बालीवध, सुग्रीव को राजा बनाना, बाली के पुत्र अंगद को अपने साथ रखना, प्राणपण से ऋषि–मुनियों की रक्षा तथा राक्षसों का नाश करना, रावण को अपने दूतों द्वारा समझाना और सीता को लौटाने का सन्देश देना, रावण के भाई विभीषण को शरण देना और रावण के वध के बाद उन्हीं को लंका का राजा बनाना, 14 वर्ष बाद अयोध्या लौटकर भरत के आग्रह पर राजा बनना और अपनी तीनों माताओं को समानरूप से सम्मान देना, एक आदर्श राजा व पिता के रूप में प्रजा का पालन करना रामचन्द्र जी को एक आदर्श मनुष्य व पुरुषोत्तम बनाते हैं। यही मनुष्य जीवन का उद्देश्य भी है। इसी कारण मध्यकालीन अल्पज्ञानी लोगों ने वेदों से अनभिज्ञ होने के कारण उन्हें परमात्मा के समान पूजनीय स्वीकार किया और आज तक भी उनका यश कायम है। करोड़ो लोग उनके जीवन से प्रेरणा लेते आये हैं व अब भी ले रहे हैं। यदि इतिहास में उपलब्ध सभी जन्म लेने वाले महापुरुषों के जीवन पर दृष्टि डालें तो रामचन्द्र जी के जैसा महापुरुष विश्व इतिहास में दूसरा उपलब्ध नहीं होता। आज भी रामचन्द्र जी का जीवन प्रासंगिक एवं प्रेरणादायक है। हमें बाल्मीकि रामायण का अध्ययन करने के साथ रामचन्द्र जी के गुणों को अपने जीवन में धारण करने का प्रयास करना चाहिये। इसी से हमारा जीवन सार्थक होगा। रामनवमी रामचन्द्र जी का जन्म दिवस है। इस दिन हमें उनके जीवन पर किसी वैदिक विद्वान की कथा व प्रवचन सुनना चाहिये और उससे लाभ उठाना चाहिये।

—196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001, फोनः 09412985121

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् मंगोलपुरी की कर्मठ टीम राष्ट्रीय अध्यक्ष के साथ

आर्य समाज मंगोलपुरी के उत्सव में राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य व मण्डल अध्यक्ष महेन्द्र टांक के साथ केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की स्थानीय टीम । द्वितीय चित्र में महेन्द्र टांक के अभिनन्दन का द्रश्य।

हजारीबाग आर्ष कन्या गुरूकुल में प्रवेश

आर्ष कन्या गुरूकुल, आर्य समाज, हजारीबाग, झारखण्ड द्वारा 2 डी.एच. से संचालित आर्ष परम्परा के सवांहक ''आर्ष कन्या गुरूकुल'' में आयु 9 से 12 वर्ष तक प्रवेश परीक्षा दिनांक 26 मई व 16 जून 2019 को ली जायेगी। इच्छुक सम्पर्क करें–पुष्पा शास्त्री, प्राचार्या, फोनः 9430309525, 930888705

(पृष्ठ 1 का शेष)

आह्वान किया। परिषद् के महामन्त्री आचार्य महेन्द्र भाई ने कहा कि आर्य समाज राष्ट्र का सजक प्रहरी है क्योंकि महर्षि दयानन्द ने ही सबसे पहले स्वदेशी का नारा देकर आजादी की अलख जलाई थी।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने अपने सन्देश में कहा कि वीर शहीदों के अमर बलिदान से ही देश को आजादी मिली, चरखें तकली से आजादी नहीं मिली। आज इस स्वतन्त्रता की रक्षा करने का कर्तव्य प्रत्येक भारतवासी का है। आज राष्ट्रवादी विचारधारा से देश के युवाओं को जोड़ने की आवश्यकता है जिससे वह देश भक्त बने। केन्द्र सरकार को चाहिये की आंतकवाद व उनके संरक्षकों को सख्ती से कुचले।

बहिन सुषमा शर्मा, सुधा वर्मा, सुरेन्द्र तलवार, कै. अशोक गुलाटी ने देश भक्ति पूर्ण गीत सुनाये। प्रमुख रूप से यशोवीर आर्य, रामकुमारसिंह, वेदप्रकाश आर्य, के.एल.राणा, प्रवीन आर्य, सुरेश आर्य, विश्वनाथ शास्त्री (गाजियाबाद), वीरेन्द्र योगाचार्य (फरीदाबाद), राजेश मेहन्दीरता, विजय कपूर, देवेन्द्र भगत, देवदत आर्य, विजय सब्बरवाल, सुन्दर शास्त्री, हंसराज आर्य, नाहरसिंह आर्य, ऋषिपाल खोखर, हरिचन्द आर्य, सुरेन्द्र गुप्ता, ओमप्रकाश पाण्डेय, ओमप्रकाश शर्मा, मानवेन्द्र शास्त्री, सुदेश भगत आदि उपस्थित थे। अरूण आर्य, गौरव गुप्ता, शिवम मिश्रा, वरूण आर्य, राकेश आर्य व केशव आर्य ने व्यवस्था सम्भाली। प्रधानमन्त्री व केन्द्रीय गृहमन्त्री को ज्ञापन भी दिया गया।

प्रकाशनादि का विवरण फार्म-4

1. प्रकाशन स्थान	:	आर्यसमाज, टी-176-177, कबीर बस्ती, पुरानी सब्ज़ी मण्डी, दिल्ली-7
2. प्रकाशन अवधि	:	पाक्षिक
3. मुद्रक व प्रकाशक का नाम	:	अनिल कुमार आर्य
क्या भारत का नागरिक है?	:	हाँ
पता	:	आर्यसमाज, टी-176-177, कबीर बस्ती, पुरानी सब्ज़ी मण्डी, दिल्ली-7
4. सम्पादक का नाम	:	अनिल कुमार आर्य
क्या भारत का नागरिक है?	:	हाँ
पता	:	आर्यसमाज, टी-176-177, कबीर बस्ती, पुरानी सब्ज़ी मण्डी, दिल्ली-7
5. उन व्यक्तियों के नाम, पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत के हिस्सेदार हों।	:	केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजी.), दिल्ली

मैं अनिल कुमार आर्य एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये विवरण सत्य हैं।

दिनांक 01.4.2019 **अनिल कुमार आर्य,** प्रकाशक

जहां नहीं होता कभी विश्राम आर्य युवक परिषद है उसका नाम

दिल्ली में आर्य कन्या चरित्र निर्माण शिविर

केन्द्रीय आर्य युवती परिषद् दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में ''विशाल आर्य कन्या चरित्र निर्माण शिविर ''रविवार, 19 मई से 26 मई 2019 तक गीता भारती स्कूल, अशोक विहार, फेज–2, दिल्ली में लगेगा।

इच्छुक बालिकायें शीघ्र सम्पर्क करें फोनः 9711161843 राजरानी अग्रवाल, शिविर अध्यक्षा–उर्मिला आर्या, प्रदेश अध्यक्षा – अर्चना पुष्करना, प्रान्तीय महामन्त्री – प्रगति आर्या, शिक्षिका

अजमेर में आर्य वीरांगना शिविर

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल के तत्वावधान में दिनांक 31 मई से 9 जून 2019 तक ''राष्ट्रीय आर्य वीरांगना शिविर'' महर्षि दयानन्द निर्वाण स्थली,अजमेर में आयोजित किया जा रहा है। इच्छुक शीघ्र सम्पर्क करें– साध्वी डा.उत्मायति, प्रधान संचालिका, 9672286863– मृदुला चौहान, संचालिका, 9810702760

उड़ीसा में युवक चरित्र निर्माण शिविर

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् ओड़िसा के तत्वावधान में ''प्रान्तीय युवक चरित्र निर्माण शिविर'' दिनांक 10 मई से 16 मई 2019 तक गुरूकुल संस्कृत महाविद्यालय, वेद व्यास, राउरकेला, ओड़िशा में लगेगा। सम्पर्कः–पं. धनेश्वर बेहरा, प्रान्तीय अध्यक्ष, 09438441227

स्वामी दीक्षानन्द स्मृति दिवस तपोवन में

अग्निहोत्री धर्मार्थ ट्रस्ट के सौजन्य से स्वामी दीक्षानन्द स्मृति दिवस रविवार, 19 मई 2019 को प्रातः 8 बजे से दोपहर 1.00 बजे तक वैदिक साधन आश्रम,तपोवन,नालापानी,देहरादून में मनाया जायेगा। सभी आर्य जन सपरिवार दर्शन देवें –दर्शन कुमार अग्निहोत्री, प्रधान

आर्य समाज, सुन्दर विहार का उत्सव

आर्य समाज, सुन्दर विहार, पश्चिमी दिल्ली का 34 वां वार्षिकोत्सव दिनांक 19,20,21 अप्रैल 2019 को मनाया जायेगा। आचार्या आयुषी भारती, पं. दिनेश पथिक, डा. लक्ष्मण कुमार शास्त्री, उमा वर्मा के उद्बोधन होंगे। आप सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं। **– अमरनाथ बत्रा, मन्त्री**

इन्द्रापुरम में वैदिक सत्संग

आर्य परिवार, ए. टी. एस. इन्द्रापुरम के तत्वावधान में नवसंवत के उपलक्ष्य में रविवार, 7 अप्रैल 2019 को प्रातः 10 बजे से दोपहर 1.00 बजे तक यज्ञ व वैदिक सत्संग का भव्य आयोजन किया जा रहा है। आचार्य महेन्द्र भाई जी यज्ञ के ब्रह्मा व परिषद् अध्यक्ष अनिल आर्य मुख्य अतिथि होगे। सभी आर्य बन्धु सपरिवार पंहुच कर उत्साह वर्धन करें **–देवेन्द्र गुप्ता, संयोजक**

शोक समाचारः विनम्र श्रद्धांजलि

1. केन्द्रीय मन्त्री श्री मनोहर पारिकर का निधन।
2. श्री एल.आर.मंगला (आर्य समाज, जैकबपुरा, गुरूग्राम) का निधन।
3. श्रीमती अल्का खुराना (सुपुत्री के. एल. छाबड़ा, आर्य समाज, रोहिणी, सैक्टर–4–5) का निधन।
4. श्रीमती कमला सब्बरवाल (आर्य समाज, अशोक विहार, फेज–1) का निधन।
5. श्री शिवप्रताप बुद्विराजा (बहनोई श्री दर्शन अग्निहोत्री) का निधन।
6. श्री टिल्लू (भांजा श्री रामकुमार सिंह आर्य) का निधन।
7. श्री रविन्द्र कुमार सलुजा (कोषाध्यक्ष, आर्य समाज, महरौली) का निधन।

सम्पादकः **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिंटर्स**, 2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक :** दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970